नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

संपर्क, शिक्षा, संवाद की भाषा बने हिंदी –कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

हिंदी संपर्क, शिक्षा और संवाद की भाषा बननी चाहिए। हिंदी में विभिन्न भारतीय

भाषाओं के शब्दों को लेकर उसका शब्दसंग्रह बढ़ाकर निरंतर विस्तार करना चाहिए। हिंदी को वैश्विक फलक पर स्थापित करने के लिए उसे व्यापार,तकनीक और सम्पेषण के साथ मनुष्य के स्वाभिमान की भाषा बनाना होगा। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्त ने व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय में 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। तुलसी भवन स्थित साहित्य विद्यापीठ के महादेवी वर्मा सभागार में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने 'भारतीय भाषाओं के संदर्भ में राजभाषा'

विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर आयोजित चर्चा में साहित्य विद्यापीठ के

सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना,जनसंचार विभाग के प्रोफेसर कृपाशंकर चौबे,भाषा

विद्यापीठ के प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय, सहायक प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार दुबे ने हिंदी के विकास को लेकर अपने मंतव्य व्यक्त किए।
दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया।

कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य मुख्य राजभाषा अधिकारी प्रो. एल. कारुण्यकरा ने दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी के व्यापक विस्तार हेतु हिंदी जानने समझने वालों को दक्षिण या अन्य भारतीय भाषाओं को सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं के साथ ही हिंदी का विकास होगा।

मुख्य वक्ता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने कहा कि हिंदी एक भाषा समूह है। वह चेतना की संवाहिका है। हिंदी में समस्त भाषाओं का समावेश है और ऐसे संदर्भ में हिंदी को देखना चाहिए। उनका कहना था कि हिंदी का विकास सरकार और संस्थानों का काम है और इस दिशा में सकारात्मक प्रयास जारी हैं। राजभाषा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा का सवाल भारतीय भाषाओं का सवाल है। उन्होंने बल देकर कहा कि हिंदी के विकास के लिए में हमें अपना शेयर बढ़ाना चाहिए।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि बहुभाषिकता को जगह देकर हमें जिम्मेदारी के साथ हिंदी का विस्तार करना चाहिए। हिंदी में शिक्षा और उसका सामाजिक व्यवहार में निरंतर उपयोग होना चाहिए ताकि वह जनमानस की भाषा के रूप में स्थापित हो सकें। भाषा के विस्तार के लिए इसके विपणन के रास्ते और तकनीक खोजनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि भाषा संस्कृति और सभ्यता का निर्माण करती है और संस्कृति हमेशा सामाजिक ही होती है। वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया के 30 देशो में हिंदी की पढ़ायी होती है और वहां हिंदी बोलने वालों के समूह भी मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी का विश्वविद्यालय होने से हमें हिंदी के डिजिटलीकरण पर काम करना चाहिए। आज हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में असीम अवसरों की संभावनाएं हैं। इस दिशा में हमें प्राकृतिक भाषा संसाधन पर काम करना होगा। उन्होंने हिंदी दिवस का संदर्भ देते हुए कहा हिंदी दिवस भारतीय भाषाओं की पहचान और अभ्यूदय का दिन है ।

कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी राजेश यादव ने किया । धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो कृष्ण कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। समारोह कजाकिस्तान,बांग्लदेश के विद्यार्थी सहित अध्यापक, विद्यार्थी एवं कर्मी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

माननीय संपादक/संवाददाता

महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।